वेदों की खुशबू

ओ३म्
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

| Monthly Magazine | Issue 74 | Year 7 | Volume 9 | September 2018 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual-Rs. 120- see page 6 |
|---|---|---|---|---|---|---|

## मनुष्य सीमित है। प्रभु अनन्त है

अभी मैं कुछ देर पूर्व सोच रही थी, क्या कारण हो सकता है कि मां अपने बेटों को बहुत प्यार करती है। बेटा भी मां को बहुत प्यार करता है, पर जब बेटे की शादी हो जाती है, पत्नी आ जाती है तो बेटा जानता भी नहीं है कि वह मां की उपेक्षा कर रहा है और जाने–अनजाने वह मां से दूर होता जाता है। क्या हो जाता है उसे? कल वह छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखता था। मां के समस्त दुख–सुख उसकी आंखो के समक्ष नाचते थे, पर अब मां बहुत दुखी है, पर बेटे को जानकारी भी नहीं है।

क्या सभी बेटे नालायक होते हैं? ऐसा होता क्यों है? किसी भी रिश्ते के बीच में कोई आ जाता है तो रिश्ते के प्रेम में कमी क्यों आ जाती है? थोड़ी देर के लिए कारण ढूंढा तो इसका पता लगा कि आदमी सीमित है। एक साथ वह अनेक लोगों से बराबर मात्रा में प्रेम नहीं कर सकता। उसके पास क्षमता कम है। इसलिए एक से प्रेम को निभाता है तो दूसरे से प्रेम निवर्हन में कमी आ जाती है। दूसरे से प्रेम निभाने में कमी आ जाती है। अगर मां के प्रति प्रेम निभाने लग जाता है तो पत्नी से प्रेम में कमी आ जाती है और पत्नी के प्रति प्रेम निभाने लग जाता है तो मां के प्रति प्रेम में कमीं आ जाती है। यही बात बाकी सभी रिश्तों मे भी है। जब भाई बहन छोटे होते हैं तो आपस में बहुत प्रेम होता है। एक दूसरे के लिये कुछ भी त्याग करने को तत्पर रहते हैं परन्तु जैसे ही शादियों के बाद अपने परिवार हो जाते हैं तो आपस का प्यार वैसा नहीं रहता। कारण उस प्यार के हकदार जीवन साथी और बच्चे

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
# 231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

भी हो जाते हैं। मतलब आदमी के प्यार की क्षमता सीमित है।

जब प्रभु की तरफ मन गया तो भाविभोर हो गया। प्रभु अनंत है और उनके भक्त भी अनंत होंगे। इंसानों के तो बहुत कम रिश्ते होते हैं, प्रभु के कितने भक्त न जाने इस ब्रह्मांड में कहां–कहां लोग फैले पसरे हैं। शायद आसमान के तारे कम पड़ जाएं, जितने भक्त हैं ब्रह्मांड में।

न मालूम पृथ्वी जैसी और कितनी पृथ्वियां होंगी? न मालूम अलग–अलग कितनी सृष्टियां होंगी? सभी में परमात्मा के प्रेमी होंगे। ऐसे में हम लोग किसी कोने मे हुए से बैठे हैं तो वह प्रभु क्या हम लोगों को भूल जाएंगे? क्या वे अपना प्रेम हम लोगों से नहीं निभाएंगे? क्या एक भक्त से प्रेम निभाने पर दूसरे भक्त की उपेक्षा हो जाती है? अंतस ने कहा, 'नहीं। एक साथ अनंत जीवों की भक्ति को स्वीकार करने वाले मालिक धन्य है। प्रभु एक साथ सभी जीवों से प्रेम करने में सक्षम है। जहां आदमी के प्यार की क्षमता सीमित है, प्रभु के प्यार की क्षमता असीमित है। इसलिए तो कहा जाता है कि प्रेम की संतुष्टि प्रभु से जुड़कर ही संभव है।

सभी के हृदय में प्रेम की चाह है, प्रेम की मांग है। ये भोग, ये वासना, ये इंद्रियगुलामी सभी न मिले तो वह पागल हो जाए। इंसानों की अथवा समस्त जीवों की सबसे ज्यादा चाहत प्रेम देने की और प्रेम पाने की है और प्रेम से संतुष्टि एकमात्र ईश्वर के प्रति प्रेम निवेदित करने पर ही संभव है।

एक संसारी व्यक्ति अगर किसी से प्रेम करता है और कल उसके मन की चाहत की कसौटी में वह खरा न उतरे तो उसके प्रति प्रेम कम हो जाएगा। चाहे वह बहन, मां, दोस्त, भाई, पति, पत्नी या अन्य कोई हो, पर मालिक (परमात्मा) का अपना कोई स्वार्थ नहीं है। सहज ही वे प्रेम बांटते है।

प्रेम का संबंध सबसे बड़ा होता है और संसार के प्रति प्रेम संभव नहीं हो सकता। मोह हो सकता है, राग हो सकता, जिसे हम प्रेम समझ बैठते हैं। संसारिक भावनात्मक लगाव को भी प्रेम कहा जाता है और भगवान के प्रति विशुद्ध भक्ति को भी प्रेम कहा जाता है, पर वास्तव में भगवान के प्रति निवेदित की गई भक्ति ही प्रेम है।

प्रेम की प्यास, प्रेम पाने की तड़प, परमात्मा के अतिरिक्त और कहीं भी नहीं मिट सकती। परमात्मा प्रेमस्वरूप है। प्रेमस्वरूप परमात्मा से जब हम प्रेम करते हुए जुड़ जाते हैं तो प्रेमस्वरूप हो जाते हैं। प्रेम में परम संतुष्टि मिलती है। मेरे स्वामी, मेरे सर्वस्व, मेरे प्रेमाचार मेरी अनदेखी कभी नहीं करेंगे। वे हमें नहीं ठुकराएंगे। वे हम लोगों से बस प्रेम चाहते हैं और बदले में अनंत प्रेम को उड़ेल देते हैं।

परमात्मा को आपका चढ़ावा नहीं चाहिए। उनके यहां क्या लड्डुओं और चाढ़ावों की कमी है? वे ही तो आपको लड्डू देते हैं। उन्होंने ही तो संसार बनाया है। आप क्या जी को चढ़ाओगे ? यह फूल पत्ते तो उन्हीं के बनाए हुए हैं। उन्होंने ही तो सृष्टि बनाई। उन्होंने ही तो पृथ्वी बनाई। तुम क्या चढ़ाओगे उन्हें ? उन्हीं की चीज उन्हीं के चरणो मे समर्पित करते हो। उन्हें यह सब नहीं चाहिए।

कई बार यह भी कहा जाता है कि प्रभु के बनाये प्राणियों से प्रेम करना प्रभु से प्रेम करने के समान है। परन्तु यहां यह समझना होगा यह प्रेम भी

उतना ही कठिन है जितना कि प्रभु साथ प्रेम करना । कारण यह प्रेम विशुद्ध प्रेम है जिस में मोह और स्वार्थ का अशं मात्र भी नहीं। जब कि सभी परिवारिक प्रेमों में मोह और स्वार्थ के अंश होते है। किसी अंजान व्यक्ति से प्रेम, जिसमें हमारा कोई स्वार्थ नही इस श्रेणी मे आता है। परन्तु यह प्रेम का भाव भी तभी पैदा होता है जब मनुष्य प्रभु के प्रेम में डूब जाता है। यही प्रभु के प्रेम की खास बात है। इस प्रेम से धृणा का स्थान प्यार ले लेता है, मनुष्य कुछ पाना नहीं परन्तु देना चाहता है, व्यक्ति के मन से भय नाम की चीज खत्म हो जाती है, वह अपने शत्रु को भी गले लगाना चाहता है। बहुत से व्यक्ति कहते हैं कि स्वामी दयानन्द द्वारा अपने कातिलों को ही क्षमा करना सही नहीं था परन्तु वे यह नहीं समझते कि योग, त्याग और प्रभु भक्ति द्वारा ऐसी महान आत्माओं के मन की स्थिती ऐसी हो जाती है कि कि उनके मन मे घृणा, द्वेष और बदले की भावना का कोई अंश नहीं रहता। उनके मन में सभी के लिसे प्रेम हीी हो जाता है

*******

# पत्रिका के लिए शुल्क

## सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central Bank of India A/C No. 3112975979, **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu Sood, IDBI Bank -0272104000055550, **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank-02421000021195, **IFS Code-PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H.No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
4. दो साल से अध्कि का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैंक भेज दे।

# ईश्वर भक्ति

महात्मा वेदानन्द सरस्वती

भले ही हम अपनी अज्ञानता के कारण ईश्वर को देख नहीं पा रहे, लेकिन यह खयाल तो सब के मन में आता है कि इस अदभुत बहमाण्ड को बनाने और इस का संचालन करने वाला कोई तो जरूर है, जिस के बनाये नियमों से यह सृष्टि चल रही है। व्यक्ति द्वारा बनाई हर वस्तु में अनियमता आ जाती है, चाहे हवाई जहाज है या रेल गाड़ी या फिर आपके द्वारा प्रयोग किये जाने वाला कम्पयूटर या फोन परन्तु ईश्वर के संचालन का कमाल देखें, अरबों सालों से किसी स्थान पर सूर्य एक ही समय पर उदय और अस्त हो रहा है। इस संसार की विविधता और सौन्द्रय को देखकर हैरानगी होती है। उसके प्रभुत्व की रोशनी सब जगह नजर आती है और मन से यही निकलता है

जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है
मेरी हर नजर में बसा तू ही तू है।

और अन्दर से यह आवाज आती है———कौन है यह जादूगर? जरा साचिये सूर्य की रोशनी और उष्मा के बगैर क्या यह जीवन सम्भव है, वायु जिस में की ओक्सीजन की निशचित मात्रा चाहिये क्या उस के बगैर यह जीवन सम्भव है? क्या जल के बिना यह जीवन सम्भव है? या फिर फल फूल वनस्पति के बिना यह जीवन सम्भव है?

हमें कोई एक कप चाय का पिला देता है तो हम उसका कई बार धन्यवाद करते हैं , जरा सोचिये जिस महान शक्ति ने हमें यह सूर्य का प्रकाश, वायु, जल , अग्नि, फल, फूल व वनस्पति दिये है, क्या हमें उसका धन्यबाद नहीं करना चाहिये। उसका धन्यवाद करना हमारा धर्म है यह ईश्वर भक्ति और स्तुती का एक आवश्यक अंग है। क्या ऐसे ईश्वर के साथ प्रेम करना हमारा कर्तव्य नहीं है?

ऐसे ईश्वर के साथ सम्बन्ध जोड़ना ही ईश्वर भक्ति है। हम ध्यान द्वारा, भजन, हवन और आरती द्वारा उसके साथ सम्बन्ध बनाये और उस प्रभु का ध्यान करते रहें। उस ईश्वर को अपना पिता मानकर उसके साथ अकेले में बात करें अपनी सम्स्याऐं उसे बतायें वह ईश्वर अवश्य हल बतायेगा और दुख सहन करने की और संघर्ष करने कीं शक्ति देगा। आवश्यकता यह है कि जैसा स्नेह हम अपने बच्चों से करते हैं वैसा ही उस प्रभु के साथ करें, जिस की कृपा से हमारा अस्तित्व है। श्रद्धा, प्रेम और विश्वास का नाम ईश्वर है। यदि ईश्वर में विश्वास है तो आप कुछ कष्ट आने पर इन स्वयं को भगवान कहने वाले बाबाओं की शरण नहीं पकड़ लोगे जैसे कि अक्सर होता है। ईश्वर में विश्वास का अर्थ है कि जब कष्ट भी आये तो यह मान कर चलेंगे कि ईयवर जो भी करता है उस में हमारी भलाई छुपी हुई है। केवल वेदों, धार्मिक ग्रंथों को बार बार पढ़ने से ईश्वर नहीं मिल जायेगा। इस के लिये जरूरी है कि जो कुछ भी पढ़े उस पर मनन करें, मन में बसायें और उस पर चलने का संकल्प करें। भले ही थोड़ा पढ़े

पर यदि आप को ठीक लगता है तो उसे जीवन में धारे। बिना जीवन में धारे व्यर्थ है ।

क्हते हैं कि एक बार एक महात्मा भिक्षा के लिये किसी के घर ं गये। घर की स्वामिनी ने भिक्षा देने के बाद महात्मा से कहा–––कुछ उपदेश देकर जायें। महात्मा ने कहा आज नहीं । कल खीर बना कर रखना, मुझे खीर बहुत पसन्द है। खीर खाउंगा और उपदेश भी दूंगा। घर की स्वामिनी ने खीर बना कर रख दी और महात्मा का इंतजार करने लगी। तभी महात्मा आये । पूछा––क्या खीर बनाई है। घर की स्वामिनी के हां करने पर उन्होने अपना बर्तन आगे कर दिया और बोले–––इस बर्तन में डाल दो, अपने डेरे पर जा कर ही खाउंगा। घर की स्वामिनी बर्तन अन्दर ले गई, जैसे ही खीर डालने लगी तो देखा कि बर्तन को गंदा है। उसने उसे साफ किया और फिर खीर डालकर महात्मा के पास ले गई। महात्मा बोले–– क्या बात बहुत देर लगा दी। घर की स्वामिनी ने हिचकचाते हुये जबाव दिया––महाराज बर्तन गंदा था इसलिये उसे पहले साफ किया वरना सारी खीर खराब हो जाती। महात्मा हंस दिये और बोले–––यही बात उपदेश और ईश्वर के नाम की है, जब तक हम अपने मन को पवित्र नहीं करेंगे, ईश्वर से मिलना सम्भव नहीं और यदि मन को पवित्र किये बिना ईश्वर के पास पहुंचने का प्रयत्न किया भी तो मन में शाति के स्थान पर अशांति ही होगी। इस लिये मन की पवित्रता के लिये अभयास और तप करना पड़ता है। यह सम्भव है जब हम काम ,क्रोद्ध, लोभ, मोह और अहंकार पर विजय प्राप्त कर सत्य और न्याय का मार्ग अपना लेते है। ईश्वर सत्य और निर्भय है उसे पाने लिये वैसे ही बनना पड़ेगा। अपने आप को काम ,क्रोद्ध, लोभ, मोह और अहंकार से दूर कर प्रेम और सत्य का मार्ग अपनाने के लिये तप और अभ्यास का नाम ही ईयवर भक्ति हैं।


# M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

( An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values


इस परिवर्तशील संसार में जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मर चुका है उसका पुनर्जन्म लेना निश्चित है। परन्तु जन्म लेना उन्हीं का सार्थक है जिनके जन्म लेने से उनका वशं, देश व समाज उन्नती को प्राप्त होता है।

कहने का अर्थ है जीवन में ऐसा कुछ कर जाये कि आने वाले पीढ़िया याद रखें। जैसे कि भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव असैर रामचन्द्र विसमिल्ल जैसे अनेकों की शाहदत है। परन्तु यह तभी सम्भव होता है जब व्यक्ति स्वयं से उपर उठकर त्याग, सेवा और तप का मार्ग अपना लेता है।


SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

# WHEN WE LOSE SIGHT OF OUR GOAL

Neela Sood

Long ago there lived a king in Northern part of Himalays whose only daughter besides being highly accomplished was a fast runner. When she atained marriageable age king decided to look for a suitable groom but thought it proper to take the opinion of the princess. The princess told the king that she would marry the man who runs faster than her.

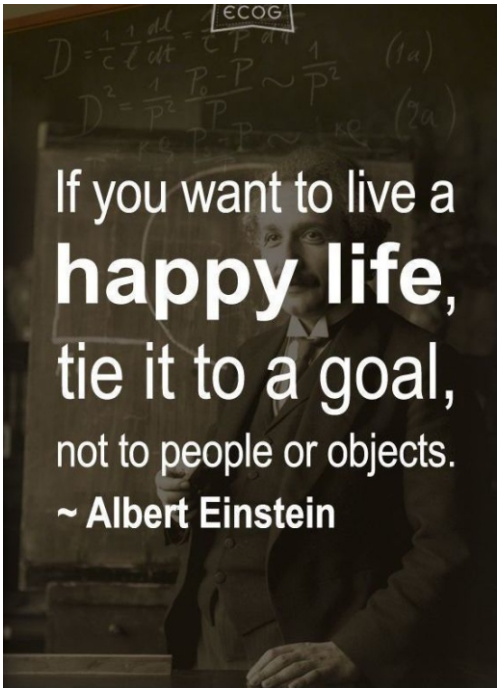


King put his ministers on the job. Many young persons from the royal families were seen but none could defeat the princess in the race. This development instead of pleasing the king took away his sleep.

When the price of Mandvi came to know of king's worry, he declared that he'd defeat the princess in the race and would make her the queen of Mandvi. The prince was not only charming but was very wise also. He had learnt by experience that diamonds and gold were any girl's biggest weakness and all women find it difficult to resist the temptation of acquiring more and more of these even if they possessed these in tonnes and in this regard princesses and her maid have same mentality.

One day before this hallowed race was to take place prince put diamonds and gold jewellary on the lane on which princess was to run. As the princess started her race glittering diamonds on the route immediately got her attention.. She halted to pick these and her joy had no bounds when she found these in plenty on the entire route. When she reached the fininshing line she had enough gold and diamonds in her lap but to her great shock prince was also there to receive her. Princess had lost the race.

When I asked the students of my class why the princess lost the race, the majority replied that she paid for her greed. But one student replied that the princess lost because she lost sight of her goal. This student was hundred percent right. I have seen we lose at the crunch moments because of such distractions. Therefore any competitor should remain focused on his goal as Arjun

# माता सुखदा सरना की कलम से

सत्संग, जिसका अर्थ मेरे अनुसार है–––सत्य के साथ संग, का मानव जीवन में बहुत महत्व है क्योकि मैं समझती हूं कि मानव के उत्थान और पतन का एक बड़ा कारण होता है उसका संग अर्थात संगती होता है। इसलिये व्यक्ति की संगती अच्छी ही होनी चाहिये। अच्छी संगती से कई गुणकारी विषय मानव के जीवन में आ जाते है। जैसे संयम और सेवा । क्रोद्ध बहुत से पाप पूर्ण कृतयों की जननी है। जब कि संयमी मानव अपने क्रोद्ध पर काबू पा लेता है। इसी तरह सेवा व्यक्ति के अंहकार को खत्म करती है। सेवा से मानव के जीवन में संतोष शक्ति और आन्नंद आ जाता है और वह तनाव से छुटकारा पा लेता है।

स्वामी रामतीर्थ जब अमेरिका गये तो उन्होने ऐसी ही कुछ बातें वहां के ऐसे लोगों को बताई, जो जीवन से उदास हो चुके थे, उन को बहुत ही फायदा हुआ और तनावरहित महसूस करने लगे।

एक और सत्संग का साधन है कि हम अच्छी पुस्तकों को अपना दोस्त बना लें। ऐसी पुस्तकों का रोज स्वाध्याय करना अपनी आदत बना ले। टैलीविजन पर आस्था या दूसरी चैनलों पर आ रहे प्रोग्राम देखने से पुस्तक पढ़ना कहीं अच्छा है कारण अैलिविजन पर अगर एक अच्छी बात सुनने को मिले तो दो और प्रदुषित अर्थात मन को अशान्त करने वाली बाते भी साथ ही होती है।

एक और सत्संग का साधन है निष्काम सेवा। सेवा ऐसे करें जैसे मां आने बच्चे की करती है। इस में सच्चा आन्नद है। परन्तु सेवा उसकी करें जो इस के काविल हो। जैसे कोई अति निर्धन हो। उस की कमी दूर करने के लिये धनराशी दें, उदाहरण के लिये उसकी बेटी की शादी। जिस बच्चे का कोई नहीं , अर्थात अनाथ है उसें पढ़ा लिखा कर अपने पांव पर खड़ा करना अहुत नेक काम है। और अगर वह लड़की है तो यह जिम्मेवारी उस की शादी करने तक निभायें।

कई सेवाये बिना पैसे के भी हो सकती हैं। जैसे अन्धे को सड़क पार करवाना। कोई जानने वाला अस्पताल में हैं पर देख भाल करने वाला नहीं, उसकी देखभाल कर दो, घर का खाना पहुंचा दो। ऐसे छोटे छोटे सेवा के कृत न केवल आन्नद देने वाले होते हैं परन्तु तनाव से भी दूर रख्रते है।

माता सुखदा 92 वर्षीय हैं, हमारे घर के पास ही रहती हैं। अपना लिखा हुआ हमें छापने के लिये दे देती है। ईश्वर उन्हें लम्बी आयु दें व कलम को शक्ति ताकि उनके बहुत ही सुन्दर विचार हम सब को मिलते रहें।

---

## पुस्तक

**( English book of short stories)**

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट( Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

**मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English**

**से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.**

**नीला सूद, भारतेन्दु सूद**

**0172–2662870, 9217970381**

# OH GOD, MAKE MY MIND A RESERVOIR OF GOOD THOUGHTS

Sometimes back my father's friend who is devoted to altruistic pursuits came to our house. He was quite old so my youngest daughter took special care of him as she'd do for her grandfather. He was immensely pleased with my daughter's conduct. The day he was to leave he made my daughter sit close to him and said, "I know your mentoring is very good but still I'll like to leave an advice for you which if followed will always keep you happy."

I was listening to their conversation and out of curiosity I also joined them. Then he said, " After you get up in the morning and before going to bed in the night, make it a habit to pray to God and while seeking His benevolence ask him to make your mind a reservoir of good thoughts only."

Continuing he said, "When your thoughts are good your tongue will be sweet. What you speak will be pleasing to others since our thoughts become our words. When your speech creates positive vibes your actions automatically become noble since our words become actions. When your actions are good your habits will also be good since our actions slowly take the shape of our habits. And you know it is our habits which shape our character and it is our character which goes to design our destiny. Therefore it is very important that we think well and do not allow the bad, depressing and negative thoughts to enter our mind."

Nothing manifests it better than the character of Duryodhna in Mahabharata epic. His mind was the fountain head of sinful thoughts and that shaped his character and actions. In the face of this Yudhishtra's mind would always breed noble thoughts. Yudhishtra noble thoughts not only had impacted his character and actions but also kept Pandava on virtuous path that ultimately won them the war against formidable foes.

In Yazur veda a sukta **" tanme mana shiv sankalpam astu** " Oh God! Make my mind a reservoir of good thoughts—finds its mention time and again to emphasize the importance of good thoughts and pure mind.

**Ms Neela Sood**

# किसी को ज़हर देकर मारने की बजाय अपने अच्छे व्यवहार से उसके मन को जीत लेना अधिक श्रेयस्कर है

*सीताराम गुप्ता*

सोशल मीडिया में तैरते हुए एक संदेश मुझ तक भी पहुंचा। लिखा था कुछ लोग इज़्ज़त देने के नहीं ज़हर देने के क़ाबिल होते हैं। कितनी पीड़ा, कितना आक्रोष, कितनी असहिश्णुता व कितनी नफ़रत भरी हुई है इस छोटे से संदेश में। प्रश्न उठता कि क्या कोई भी व्यक्ति जो इज़्ज़त देने के क़ाबिल न हो उसे केवल ज़हर ही दिया जा सकता है? क्या ज़हर देना ठीक है? क्या यह संभव है? बहुत सारे प्रश्नों के बीच बहुत पहले कई बार पढ़ी हुई एक चीनी लोककथा याद आ गई। एक लड़की शादी के बाद अपनी ससुराल पहुंची। उसकी सास बहुत ही सख़्त स्वभाव वाली एक बेहद ख़राब औरत थी जिसके कारण उसका जीना मुश्किल हो गया। वह बहुत दुखी रहने लगी। वह किसी भी क़ीमत पर उससे छुटकारा पाने के उपाय सोचती रहती। एक बार जब वो अपने मायके आई तो उसने अपने घरवालों व पड़ौसियों को अपनी सास के बारे में बताया।

उसके पड़ौस में रहनेवाले एक समझदार व्यक्ति ने जब उसकी सास की दुष्टता के बारे में सुना तो उसने कहा कि वो उसे उसकी सास से छुटकारा दिला सकता है। कैसे? लड़की के ये पूछने पर उस व्यक्ति ने उसे एक डिब्बे में चूर्ण जैसी कोई चीज़ देते हुए कहा कि इसमें एक धीमा ज़हर है। इसमें से रोज़ थोड़ा–थोड़ा अपनी सास के खाने में मिला देना। वो कुछ ही महीनों में मर जाएगी और तुझे उससे छुटकारा मिल जाएगा। तुम्हारी सास व अन्य लोगों को तुझ पर शक न हो इसलिए इस दौरान अपनी सास की ख़ूब इज़्ज़त करना और उसका कहना मानना। उसे रोज़ अच्छा–अच्छा खाना बनाकर खिलाना। लड़की ख़ुशी–ख़ुशी ये सब करने को तैयार हो गई। लड़की जब पुनः अपनी ससुराल पहुंची तो उसने वैसा ही किया जैसा उसके पड़ौस में रहनेवाले समझदार व्यक्ति ने कहा था।

वह अपनी सास की ख़ूब इज़्ज़त करती और अच्छे से अच्छा खाना बनाकर व उसमें पड़ौसी का दिया हुआ ज़हर डालकर प्रेमपूर्वक अपनी सास को खिलाने का नाटक करती। लेकिन पुत्रवधू की इस काल्पनिक सेवा और सम्मान ने सास का मन बदल दिया। उसका दिल जीत लिया। वह सचमुच अपनी पुत्रवधू से प्यार करने लगी। अपनी सास के प्यार के कारण लड़की भी अपनी सास की और

अधिक सेवा व सम्मान करने लगी। दोनों को ही एक दूसरे से बेहद प्रेम हो गया और वह इतना अधिक बढ़ गया कि वे एक दूसरे के बिना रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती थीं। लड़की ये सोचकर कि ज़हर के प्रभाव से उसकी सास कुछ ही दिनों में मर जाएगी दुखी रहने लगी। अब वह किसी भी तरह से अपनी सास को खोना नहीं चाहती थी।

लड़की पुनः एक दिन अपने मायके गई और पड़ौस में रहनेवाले समझदार व्यक्ति से कहा, '' अब मैं अपनी सास को प्यार करने लगी हूं। मैं उसके बिना नहीं रह सकती। आप किसी भी तरह से मेरी सास को बचा लीजिए।'' पड़ौसी ने कहा कि तुम्हारी सास को कुछ नहीं होगा क्योंकि मैंने जो चीज़ दी थी वो ज़हर नहीं स्वास्थ्यवर्धक औषधि थी। ज़हर तो तुम्हारे मन में था जो सास के प्रति तुम्हारे अच्छे व्यवहार और सेवाभावना के कारण प्यार में बदल चुका है।'' ये सुनकर लड़की की जान में जान आई। तो ऐसा होता है सम्मान और देखभाल का प्रभाव। ज़हर देकर हम लोगों से छुटकारा नहीं पा सकते लेकिन किसी का दिल जीतकर उसे अपना बना सकते हैं। उसे इतना क़रीब ला सकते हैं कि उससे दूर होने की कल्पना भी नहीं कर सकते।

पर क्या यह इतना सरल है? हां यह अत्यंत सरल है लेकिन हम करना नहीं चाहते। हम ईंट का जवाब पत्थर से देने के अभ्यस्त हैं। और इसके लिए परिणामों की भी परवाह नहीं करते। यदि हम ज़हर देकर किसी को समाप्त करने का प्रयास करते हैं तो इसके क्या परिणाम होंगे? किसी को भी ज़हर देकर अथवा अन्य किसी भी तरीक़े से यदि हम उससे छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं तो इस क्रत्य के लिए सबसे पहले हम स्वयं अपनी नज़रों में गिर जाएंगे और जीवनभर अपराधबोध से तड़पते रहेंगे। किसी का जीवन लेने मात्र से हमारी सारी समस्याओं का समाधान होना भी असंभव है। इस संसार में बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्हें हम बिल्कुल पसंद नहीं करते और अनेकानेक लोग ऐसे हैं जो हमें पसंद नहीं करते।

बहुत से लोग हमें दुख पहुंचाते रहते हैं। ऐसे में हम पूरी तरह से सुखी होने के लिए आख़िर कितने लोगों को ज़हर दे सकते हैं? और फिर ज़हर देना क्या इतना सरल है कि जब चाहा जिसे ज़हर देकर मार डाला? क्या ज़हर की व्यवस्था करना निरापद अथवा सरल है? जब हम किसी को ज़हर देने के लिए ज़हर खोजने जाएंगे तो भी बड़ी सावधानी से चोरों की तरह जाएंगे और सौ झूठ–सच बोलकर मुश्किल से कहीं से ज़हर ला पाएंगे। किसी को ज़हर देकर मारने का इरादा करने, ज़हर लाने, उसे संभालकर रखने और किसी को ज़हर देकर मार डालने की इस प्रक्रिया में ही हम स्वयं न जाने कितनी बार मरेंगे? ज़हर किसी को देना हो या उसे लाना हो वो हमेशा ज़हर ही रहेगा। ज़हर हमेशा अनिश्ट ही करेगा।

हम जब भी किसी को ज़हर देने का इरादा करते हैं सबसे पहले स्वयं अपने अनिष्ट की भूमिका लिखते हैं। यदि हम किसी को मारने के लिए ज़हर की व्यवस्था करते हैं तो उसे अपने पास संभालकर

रखते हैं। यदि उसका उपयोग (दुरुपयोग) नहीं कर पाते तो हम उसे अपने पास रखने को अभिषप्त होते हैं। ये तो हुई ज़हर की बात लेकिन यदि हमें किसी को ज़हर देने की बजाय उसे फूल देने हों तो? यदि हम किसी को उपहार में देने के लिए फूलों का गुलदस्ता लेने जाएंगे तो हमें चोरी–चोरी जाने की ज़रूरत नहीं। जब फूल खरीदने जाएंगे तो वहां रखे विभिन्न प्रकार के फूलों को देखकर प्रसन्नता ही होगी। गंध भी हमारा स्वागत करेगी।

जहां तक ज़हर की बात है चाहे वो भौतिक रूप में हो अथवा मानसिक रूप में यदि उसे कोई अन्य स्वीकार नहीं करता तो वो हमारे पास ही बना रहता है और जीवनभर हमें मारता रहता है। इसके विपरीत यदि हम किसी को फूल भेंट करते हैं तो अस्वीकृति का प्रश्न ही नहीं उठता और यदि कोई उन्हें अस्वीकार कर भी देता है तो वो हमारे पास रहेंगे और ये फूल जब तक हमारे पास रहेंगे हमें प्रसन्नता ही प्रदान करते रहेंगे। जब हम किसी के लिए कोई उपयोगी अथवा सार्थक उपहार खरीदते हैं तो उपहार पाने वाले की ख़ुशी बढ़ जाती है और उस उपहार के स्वीकार न करने पर वह हमारे काम भी आ सकता है लेकिन एक अनुपयोगी व निरर्थक उपहार न तो किसी के काम ही आ सकता है और न किसी को प्रसन्नता ही प्रदान कर सकता है।

ज़हर एक अनुपयोगी ही नहीं सबके लिए घातक उपहार है। ज़हर देकर मारना भी क़त्ल अथवा हत्या का ही एक रूप है। यदि हम किसी को ज़हर देकर मारते हैं तो हमारे बचने की संभावना भी बिल्कुल नहीं है। आज तक कोई हत्यारा कानून के शिकंजे से नहीं बच पाया है तो हम कैसे बच पाएंगे? दूसरों को ज़हर देकर मारने का प्रयास करने वाले लोग अपने अंत समय में स्वयं ज़हर की कामना करते देखे गए हैं लेकिन उन्हें वो भी मयस्सर नहीं हो पाता। अपने विरोधियों अथवा परेशान करनेवाले लोगों को ज़हर देकर अथवा अन्य किसी भी प्रकार से मारने का प्रयास तो दूर, सोचना भी

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा, दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323 Email : srgupta54@yahoo.co.in

******

**प्रकाश औषधालय**

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डबार,
वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,
कामधेनु जल व अन्य
आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH, GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sector 20-D, Chandigarh

# DOES THE UNIVERSE HAVE A PURPOSE?

Pro. (Dr) S.P. Puri

The John Templeton Foundation in U. S. A. serves as a philanthropic catalyst for research on what scientists and philosophers call the Big Question. They support work at the world's top universities in such fields as theoretical physics, cosmology, evolutionary biology and the nature and origin of religious beliefs. They encourage informed, open-minded dialogue between scientists and theologians as they apply themselves to the most profound issues in their respective disciplines.

Does the universe have a purpose[1]? This big question was posed to a galaxy of scholars and thinkers of the first rank, including a Nobel Laureate. Based on their viewpoints, roughly half of the participants did ascribe to the thought that the universe has a purpose whereas the others re-joined that it has no purpose whatsoever. The discussions are available in a booklet published by the foundation.

**Based on scientific evidence presented in the earlier chapters that the universe has an intelligent design and is not due to a chance, it seems plausible to think that the creator must have a purpose for its creation. Only the creator is able to divulge that purpose as its knower. We discuss this statement by a metaphor[2].**

**Let us assume that your mother bakes a cake as a surprise to you. Imagine that you have a scientific colleague who is adept in answering any question related to the cake. He summons top dieticians to answer on the calorific and nutritive values of the cake's ingredients; chemists about the bonding of the ingredients and theoretical physicists regarding the fundamental particles constituting the cake. Yet none of them will be able to specify and articulate the precise purpose for baking the cake.**

**The only source of knowing the purpose is to ask your mother. Your learned colleague may have the audacity of rejecting your suggestion, calling it unscientific source of knowledge. He may conclude that the cake had no purpose since science had not found any purpose. It had no purpose—it just happened**.

Your mother will not accept the dismissal of her labour of love by a "just happened hypothesis." As a stable minded person she dismisses the ad hoc hypothesis and conveys that she baked the cake as a silver jubilee celebration of the of birth of her son. It is my love and affection that prompted me to bake a cake today.

Identical reasoning applies to the study of the universe. The world's best scientists may unravel the Big Bang Theory for the creation of the universe but will not be able to spell out the purpose (why or need) of the creation. To know the universe's purpose, we need to turn to its creator. He offers answers through revelations in the form of spiritual wisdom throughout all civilizations.

If creation of humans (roof and crown of creation) was in the scheme of nature, the universe had to be created ahead, since human body has elements which are not created in small stars like our sun. Sun has only hydrogen that acts as its fuel and helium. Hydrogen and helium

account for nearly all the matter in the universe and figures for relative abundance of elements indicate that helium is 25 % by mass and hydrogen about 73 % with all other elements constituting less than 2 %. The elements other than hydrogen and helium are nucleo-synthesized in very massive stars as their synthesis requires higher temperatures. When the star becomes unbalanced, it explodes through a supernova explosion and the elements get scattered in the universe with some falling on earth[3]. The biochemical activity of the human body will not be possible without the availability of these elements, some of which occur as tracers.

The universe is composed of 'inanimate' (lifeless material objects; Prakriti) and 'animate' (live; Jiva) forms. Material objects are composed of atoms and have no consciousness. Animate objects like human beings and animals are conscious and have cognitive faculty of mind. The human consciousness is called the soul (Atman; Jeevatman) which has only limited knowledge, strength and power of action. The formless soul when manifesting in living body, is the consciousness that can act, create and feel. It has desires, envy, hatred, pain and pleasure and can think and acquire knowledge and wisdom.

The universe is dynamic as it is expanding with accelerated expansion and it provides a field of experience to the individuals so that they may evolve towards the experience of the highest truth.

# DO PROBLEMS HAUNT YOU? TAKE UP THE CHALLENGES ONE BY ONE

Human life is a mystery in which problems keep on befalling at regular intervals. Some people brace themselves for the challenges of life while others buckle down under the pressure of what seem to be insurmountable hardships of life.

However, giving in to the problems without trying to fight can be seen as lack of courage and an escapist attitude from the essential fulcrums of a balanced and blissful life.

Two important questions arise here: The first is, how to solve the problems of life without losing patience? One of the timeless treatises on braving challenges is to live life like an hourglass from which grains of sand drop one by one, over time. It means you should take up the challenges one by one. Trying to solve all the problems of life in one go is a waste of time. **It has correctly been said that no man ever sank under the burden of the day. When the burden of tomorrow is added to today's burden, only then the weight is more than a man can bear. So, leaving the future to God and minding only what is happening now prevents us from falling into the whirlpool of anxieties and stresses.**

The famous Greek philosopher and mathematician Pythagoras used to teach his disciples to live for the day. Living myriad moments at a time is the root of human miseries. Learning to avoid the rush of an avalanche of problems is a timeless secret to gain emotional poise and happiness.

# गीता सन्देश

कृष्ण चन्द्र गर्ग

गीता से हमें दो मुख्य सन्देश मिलते हैं – एक आत्मा की अमरता का और दूसरा कुशलता पूर्वक कार्य करने का।

1 यह आत्मा न कभी उत्पन्न होती है और न ही कभी मरती है। यह अजन्मा है, अनन्त है और सदा रहने वाली है। शरीर के मरने पर भी यह नहीं मरती।

आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग इसे जला नहीं सकती, पानी इसे गला नहीं सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती।

जैसे मनुष्य फटे पुराने कपड़ों को उतार देता है और नए कपड़े पहन लेता है, उसी प्रकार यह आत्मा पुराने निक्म्मे हुए शरीर को छोड़कर दूसरा नया शरीर धारण कर लेती है।

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है और जो मर चुका है उसका पुनर्जन्म लेना निश्चित है।

2 गीता में योगीराज श्री कृष्ण लिखते हैं – योगः कर्मसु कौशलम्। अर्थात् कुशलता पूर्वक कार्य करने का नाम ही योग है। श्री कृष्ण ने जो भी काम किए पूरी कुशलता ;efficiency) और सफलता के साथ ही किए।

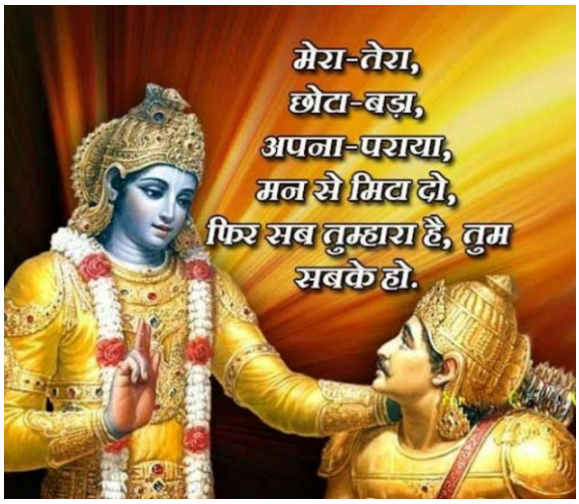


श्री कृष्ण ने मथुरा के क्रूर और स्वेच्छाचारी राजा कंस का वध करके उसके धर्मात्मा तथा प्रजापालक पिता उग्रसेन को बन्दीगृह से निकालकर वहां का राजा बनाया था।

मगध नरेश जरासंध बहुत निर्दयी तथा महत्त्वाकांक्षी था। उसने चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए 100 राजाओं को कत्ल करने का निश्चय कर रखा था। 86 राजाओं को तो पकड़कर वह अपने बन्दीगृह में डाल चुका था। ऐसे मदान्ध राजा की श्री कृष्ण ने चालाकी से भीम के साथ कुश्ती करवा दी और कुश्ती के नियमों के विरुद्ध जरासंध की जांघ तुड़वाकर उसे मरवा डाला। सभी बन्दी राजाओं को जेल से छुड़वा दिया और जरासंध के बेटे को मगध का राजा नियुक्त कर दिया।

महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की विजय का पूरा श्रेय श्री कृष्ण की सूझ–बूझ और नीति को ही है। श्री कृष्ण ने बुद्धि और नीति से ही भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य, कर्ण, दुर्योधन आदि महारथियों को मरवाकर पाण्डवों को विजय दिलवाई थी। श्री कृष्ण की नीति में 'शठे शाठ्यम् समाचरेत' शामिल था। अर्थात आतताई, अत्याचारी और कपटी के साथ कपट का व्यवहार करना ही उनकी मान्यता थी। निर्दोष को मारने में जो पाप है वही पाप अपराधी को न मारने में है। अपराधी को दण्ड न दिया जाए तो वह और अपराध करके निर्दोषों

# 'अनेकता में एकता' का दावा एक बड़ा छल है

कृष्ण चन्द्र गर्ग

भाषा के आधार पर अलग–अलग प्रान्त, मजहब के आधार पर अलग–अलग कानून, जातपात के आधार पर अलग–अलग सुविधाएं – ये व्यवस्थाएं देश को जोड़ नहीं रही हैं, अपितु बांट रही हैं। इनके कारण विषमता, द्वेष और लड़ाई झगड़े बढ़ रहे हैं। ऐसी विषमताओं को 'अनेकता में एकता' का नाम देना देश के लोगों के साथ एक बड़ा छल है।

एक मजहब वालों पर आप उनके तथा–कथित पवित्र स्थान पर जाने के लिए कर दाताओं का अरबों रुपया खर्च कर रहे हैं तो क्या उन कर दाताओं को दर्द नहीं होता। एक जाति वालों को 40 प्रतिशत अंक आने पर आप डाक्टर बना देते हैं और उँचे पदों पर बिठा देते हैं, दूसरी तरफ 80 प्रतिशत अंक वालों को आप बाहर रख रहे हैं तो उनके मन में द्वेष पैदा नहीं होता क्या। देशहित में आवश्यक है कि जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण लगाया जाए, पर एक मजहब वाले कहते हैं कि उनके मजहब में सन्तान निरोधन की मनाही है। उस मजहब के लोगों के नाराज होने के डर से कोई भी राजनैतिक दल अब जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण की बात नहीं कर रहा। एक मजहब वाला आदमी एक साथ चार तक पत्नियां रख सकता है जबकि दूसरे मजहब वाला एक साथ एक से अधिक पत्नी नहीं रख सकता। इसलिए दूसरी पत्नी रखने के लिए वह आदमी मजहब बदल लेता है। एक मजहब वालों को अपने साथ तलवार रखने का कानूनी अधिकार है जो कहने को तो मजहबी चिन्ह है पर जरूरत पड़ने पर वह हथियार है। दूसरे मजहब वालों को यह अधिकार नहीं है। उत्तर भारत के लोग दक्षिण भारत में जाते हैं, पूर्व के पश्चिम में जाते हैं, आदि, अलग–अलग भाषाओं के कारण बोल चाल आदि व्यवहार में समस्याएं आती हैं। तो क्या ये सब विषमताएं एकता के चिन्ह हैं। जो लोग कहते हैं कि ये विभिन्नताएं एकता के चिन्ह हैं उनकी बुद्धि और नीयत पर शक होता है। देश की एकता केवल सरहद पर तैनात वीर नौजवान सैनिकों के कारण है, देश में अनेकता के कारण नहीं।

अनेकता व्यक्तिगत विषयों में रहती है जैसे कोई व्यक्ति कब सोता है, कब जागता है, क्या खाता है, क्या पहनता है, क्या काम धन्धा करता है आदि। इस प्रकार के व्यक्तिगत विषयों में सब स्वतंत्र रहते हैं। परन्तु सामाजिक और राष्ट्रीय विषयों में न स्वतन्त्रता होती है और न ही विषमता रहती है। देश के सभी कानून, सभी व्यवस्थाएं देशहित में सभी के लिए समान रूप में होनी चाहिएं जैसे सड़क पर बाईं और चलने का नियम सबके लिए एकसा है। कोई भी कानून या व्यवस्था किसी मजहब, जातपात या प्रान्त के आधार पर न हो। सारे देश में राष्ट्रभाषा पढ़ाई जानी चाहिए और सभी प्रान्तीय सरकारों की और केन्द्र की भाषा राष्ट्रभाषा ही होनी चाहिए। स्थानीय तौर पर अन्य भाषाएं पढ़ी/पढ़ाई जा सकती हैं। देश में सभी कानून मानवता और समता के आधार पर बने हों। किसी भी मजहब के लिए सरकार की तरफ से कोई भी धन व्यय न किया जाए। हज सब्सिडी पूरी तरह बन्द हो। देशहित में भूमि की सुरक्षा के लिए मुर्दा गाड़ने पर प्रतिबन्ध लगे। जनसंख्या नियन्त्रण के लिए प्रभावी कानून बनाया जाए। सभी को अपनी योग्यता बढ़ाने के और अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ने के अवसर समान रूप से उपलब्ध हों। जन्म की जातपात को और उँचे नीच की भावना को पूरी तरह समाप्त किया जाए। तभी देश में प्रेम, सद्भाव और देशभक्ति पनप सकती है। अतः एकता में ही एकता है, अनेकता में तो विघटन है।

**831 सैक्टर 10,**
**पंचकूला, हरियाणा**
**दूरभाष : 0172–2572197**

## हिन्दु धर्म के ठेकेदारों ने कैसे अपने अपने स्वार्थ के लिये धर्म की मान्यताओं की धज्जियां उड़ा दी है।

मैं छोटा था तो उत्सुकतावश अपने पिता जी से पूछ बैठा की रावण को शाम को ही क्यों जलाते है। उनका कहना था कि हमारे हिन्दु साम्प्रदाय में किसी भी मृतक को सूर्य अस्त से पहले ही अग्नि देते हैं। जहां तक दशहरे पर रावण को जलाने की बात थी सदा से इस परम्परा का पालन हो रहा था। सूर्य अस्त होते ही पुतलों को आग लगा दी जाती थी , पर पिछले तीन चार सालों से इस सदियों पुरानी परम्परा को रातनैतिक नेताओं को खुश करने के लिये तोड़ दिया गया है। आप अपने चण्डीगड़ में ही देखें किसी जगह पुतले सूर्य अस्त के आधा घंटा बाद जलाये गये तो कहीं एक घंटा बाद भी। अमृतसर में जहां यह हादसा हुआ वहां मुख्य अतिथी एक घंटा लेट पहुंली तो पुतले 7 बजे जलाये गये।
रावण को आग कब लगानी है, यह अब मन्त्रियों के आने पर निर्भर करता है।
हमने अपने धार्मिक पर्वो को एक तमाशा बना दिया है, यही धार्मिक प्रयोजनों पर होने वाली दुर्घनाओं का मुश्य कारण है।

राजनैतिक नेताओं को तो दूसरे साम्प्रदायों वाले भी खुश करना चाहते हैं पर वे अपने साम्प्रदायों की मर्यादाओं को तोड़ने अनुमती नहीं देते। यह सिर्फ हिन्दु साम्प्रदाय में ही सम्भव है।
सच्च मानिये दा मनोरंजन ने हिन्दु साम्प्रदाय का हाल बहुत खराब कर दिया है। अच्दा होगा हम जागें और मनोरंजन को ईश्वर भक्ति से अलग करें।

# बड़े व्यक्तियों की उंची सोच

दीन बन्धु सर छोटू राम आर्य समाजी थे। आर्य समाज का प्रभाव उनके हर कार्य में था। समाज में बुराईयों के सामने वह खुल कर सामने आये और बेटा बेटी में भेद करने की मानसिकता को उन्होने जीवन भर जबरदस्त चुनौती दी। उनकी सम्तान के रूप में केवल दो बेटियां थी। उस समय जब कि हिन्दु मैरिज ऐक्ट 1955 नहीं था, हिन्दु पुरूष भी कई शादियां कर सकते थे और करते थे। समाज की स्वकृति थी। चौधरी छोटू राम के शुभचिन्तको ने उनसे आग्रह किया कि पुत्र प्राप्ती के लिये वह दूसरी शादी कर लें क्योंकि हमें चिन्ता है कि आप के बाद आपका राजनैतिक वारिस कौन होगा।
सर छोटू राम ने उनके आग्रह को ठुकराते हुये कहा———बेटा और बेटी में फर्क करना ईश्वरीय नियम के विरूद्व है। जहां तक राजनैतिक वारिस की बात है, पूरे पंजाब का किसान और मजदूर ही मेरा राजनैतिक वारिस है।

# सम्पादकिय

## मोहन भागवत हिन्दु धर्म की सीमाये तय करने वाले कोई नहीं।

पहली बात––– मोहन भागवत आर ऐस ऐस (RSS) का मुखिया के रूप मे आर ऐस ऐस (RSS) के लिये कुछ सीमाये तय करें या आर ऐसे ऐस की वकालत करे, वह तो समझ आता है, परन्तु सारे हिन्दु साम्प्रदाय के लिये बोले वह ठीक नहीं । कारण जितने हिन्दु आर ऐस ऐस में हैं उस से कहीं अधिक हिन्दु आर ऐस ऐस से बाहर हैं। मेरे अनुसार दस में से दो हिन्दु ही आर ऐसे ऐस की विचारधारा को मानने वाले हा सकते हैं, इससे उपर कदापी नहीं। ऐसे में मोहन भागवत सारे हिन्दु साम्प्रदाय के लिये बोले या सारे हिन्दु साम्प्रदाय के चौधरी बने यह ठीक नहीं बल्कि एक अभद्रता है।

उनका यह कहना की मुसलमान भी हिन्दु साम्प्रदाय के अंग है बहुत हास्यप्रद लगता है। मोहन भागवत से मैं पूछना चाहूंगा कि यदि मुसलमान भी हिन्दु सामप्रदाय के अंग है तो उनकी संस्था के संस्थापको को आर ऐस ऐस बनाने की आवश्यकता ही क्या पड़ी थी। दूसरा केवल उनके कहने से ही भारतीय मुसलमान अपने आप को हिन्दु साम्प्रदाय के अंग थोड़ा भी मानने लगेगें।

सच्चाई यह है कि मानविय रूप से चाहे दोनो हिन्दु और मुसलमान एक ही हैं, एक ही ईश्वर की सन्तान है। परन्तु साम्प्रदायिक तौर पर दोनो अलग है दोनों में मूलतः भिन्नता हैं, दोनों में ही आपस मे कोई समानता नहीं। साम्प्रदायों को जो बात मूलतः एक दूसरे से अलग करती है वह है ईश्वर कौन है और उसकी उपासना कैसे की जाये बाकी सब बाते भी हैं पर इतनी मुख्य नहीं। ईस्लाम में अल्ला के सिवाय और कोई ईश्वर नहीं जब की हिन्दुओं में लाखों ईश्वर और भगवान है। ईस्लाम में अल्ला के सिवाय किसी और को ईश्वर मानना पाप व जुल्म है जब कि हिन्दु सार्म्पदाय मे ऐसा कुछ नहीं। किसी को भी मानों, किसी की भी पूजा करो। ईसलाम में मूर्ती पूजा पाप है जब कि हिन्दुओं में मूर्ती के बिना पूजा सम्भव नहीं। ईसलाम में कुरान ही मार्ग दर्शन करती है जब कि हिन्दुओं में ऐसा कोई पुस्तक नहीं जिसे सब हिन्दु माने और एक ही तरह माने। वास्तविकता यह है कि मुसलमान इन्ही कारणों की वजह से कभी यह नहीं मान सकते कि वे हिन्दुओं का अग है। जो भी यह बात कर रहा है वह अपने लिये इतिहास में स्थान बनाने में लगा है। मैं तो नहीं समझता कि कल को कोई मुसलमान भी यह कह दे कि हिन्दु ईसलाम का ही अंग है।

इन बेतुकी बातों को करने से कहीं अच्छा होगा कि मोहन भागवत हिन्दु सामर्पदाय में ही कुछ सुधार की सोचें ताकी हिन्दु धर्म कहीं बिखर न जाये। निम्न विषयों पर विचार किया जा सकता है

1 हिन्दु सामप्रदाय को जातिमुक्त कैसे किया जाये ? न हरिजन हो न ही ब्राहम्ण, सभी केवल हिन्दु।

2 हिन्दु सामप्रदाय में हजारों सामुदाय है। इस बात को तय किया जाये कि हिन्दु ईश्वर किसे माने, कैसा हो हमारे ईश्वर का स्वरूप। ताकी लोग कम से कम सांप जैसे प्राणियों की पूजा तो बंद करें। हमारे हिन्दुओं में तो न जाने किस किस की पूजा करते हैं। कुछ को तो

लिखते हुये भी शर्म आती है। हां हम मथा टेकने के लिये लाईन में हर जगह खड़े हो जाते है।

3 हमारी धार्मिक पुस्तक क्या है यदि वेद है तो उसके किस रूप को माना जाये ताकी लोग अलग अलग अर्थ न करें, आज हालत यह है कि कोई कहता है वेदों में पशु बलि की अजासत है तो दूसरा कहता है यज्ञ में भी पशओं को काट कर डाला जाता था। कोई कहता है कि औरत और शुद्र को वेद पढने का या धार्मिक कर्मकाण्ड मे हिस्सा लेन का अधिकार नहीं।

4 क्या वेदों में जातिप्रथा का स्थान है और यदि है तो किस रूप में। क्या व्यवहारिक है, यदि नही तो खत्म किया जाये। यह चीज हिन्दु धर्म के टुकड़े कर रही है। आने वाले समय में जिस को हम दलित कहते हैं वह हिन्दु धर्म छोड़कर दूसरा धर्म अपनाना पसन्द करेगा पर एसी जन्म जात जाति प्रथा जो उसे इज्जत की जिन्दगी न दे, उसे नहीं मानेगा। मैं उनके स्थान पर होता तो कब का हिन्दु धर्म त्याग देता। यह कोई बात है कि आप आपन शादी पर घोड़ी पर नहीं बैठ सकते क्योंकि यह प्रथा उंची जात वालों के लिये ही है।

5 हिन्दु सार्म्पदाय में भक्ति में बड़ता हुआ मनोरंजन कहां तक ठीक है,? आज हाल यह है कि भक्ति तो नाम के लिये ही है बाकी सब तो मनोरंजन ही है। स्टार चैनल पर राधाकृष्ण का विज्ञापन देख रहा था। श्री कृष्ण को जिस मुद्रा में दिखाया है, अपने को हिन्दु कहलाने पर शर्म आ रही थी। क्या और कोई साम्प्रदाय भी अपने भगवानों को ऐसे दिखलाने देता है? फिर हिन्दु ही क्यों। क्या करें ऐसे हिन्दु होन पर गर्व। जब की आप कहते हैं, गर्व से कहो हम हिन्दु है।

मेहन भागवत साहब! दूसरों के घरों का ठेका लेने से पहते अपने घर को ठीक करें, हालत बहुत खराब है। पहले दलितो को सम्भाले, वे निकल रहें है।

******

# सादर निमन्त्रण

आर्य समाज सैक्टर– 7 के महीने के पहले सत्संग में मैं और मेरी पत्नी नीला सूद अपने स्वर्गीय माता पिता को श्रद्धा सुमन भ्रेट करने के अवसर पर आपको दिसम्बर माह के पहले ऐतवार अर्थात 2 दिसम्बर को सादर आमन्त्रित कर रहें है। इस अवसर पर वेदों की विदुषी श्रीमती कृष्णा चौधरी का उपदेश होगा। समय 10 बजे से 12 बजे तक है। यह सभी प्रोग्राम सैक्टर सात के मासिक सत्संग का अंग है व कोई विशेष प्रोग्राम नहीं है। माननिय पुरोहित और मन्त्री महोदय के संचालन में ही होगा

नीला , भारतेन्दु व परिवार के सदस्य 9217970381

# भारत का लोकतन्त्र बहुत मंहगा हो चुका है। कुछ ऐसे ही कदमों की आवश्यकता

मेरा मानना है कि भारत का लोकतन्त्र बहुत मंहगा हो चुका है। एक रिपोर्ट के अनुसार लोक सभा और एक राज्य सभा के सदस्य पर सरकार 77 लाख रूप्या सालाना खर्च करती है। परन्तु हमारे यहां सिर्फ लोक सभा और राज्य सभा ही नहीं , इस लोकतन्त्र के रूप को विधान सभाओं से लेकर गांव पंचायत तक ले जाया गया है और यही हाल सब कहीं है। सरकार चाहे कोई भी हो, यह मानकर चलती हैं कि कोई भी टैक्स लगाओ और चाहे कितना भी लगाओ, लोग देगे ही । जी ऐस टी की आढ़ में इस सरकार ने बहुत अधिक और बेतुके टैक्स लगाये। मैं अभी मकान टरांसफर का फार्म, मेरे किसी जानने वाले के लिये चण्डीगढ़ हाउसिंग बोंड गया । चार पेज के फार्म की कीमत 200 रूपया जो कि पांच साल पहले मात्र 25 रूप्या था और उस फार्म पर 37 रूप्या जी ऐस टी।

मेरे अनुसार भारत की आर्थिक स्थिती इतनी अच्छी नहीं जितनी की दिखाई जाती है। पाकिस्तान में भी यही सब कुछ चल रहा था। कर्जे उठाकर शासन करने वाले ऐशों आराम की जिन्दगी जी रहे थे। परन्तु अमेरिका के हाथ खींचते ही वास्तविक स्थिती सामने आ गई।

परन्तु एक जो अच्छी बात हुई कि वहां ईमरान खान ने सता सम्भालते ही सिथती को देखते हुये कुछ असरदार कदम उठाये। और इस बारे में पहल अपने आप से की। स्वयं तीन बैड रूम के फलैट मे चले गये और जो प्रधानमन्त्री का निवास था उसे विश्वविद्यालय में तबदील करने का आदेश दिया। शपथ सामारोह बहुत ही सादा किया, सभी सरकार से जुड़े व्यक्तियों के लिये प्रथम श्रेणी हवाई सफर बन्द कर दिया, वशिष्ठ व्यक्तियो के लिये सभी प्रोटोकोल बन्द कर दिये। मुलक के सभी गवर्नर आउस खाली करवा दिसे है। जब कि हमारे यहां चाहे भाजपा हो या काग्रेस अपने बफादारों को गवर्नर बनाकर शाही जीवन का आनन्द देती है। प्रधानमन्त्री निवास पर

500 से अधिक कर्मचारी थे अब केवल पांच रह गये हैं, 80 कारें थी जिनमें 33 बुलेट प्रूफ थी अब सिर्फ पांच रह गई है और तो और पहले प्रधानमन्त्री द्वारा प्रधानमन्त्री निवास में रखी सैंकड़ो विशेष नसल की भैंसों को नलाम करवा दिया।

हमारे देश में भी सत्ता परिवर्तन होते हैं परन्तु आप ने किसी को भी सरकारी खर्च कम करने की बात करते नहीं सुना। हां यह जोर शोर से कहते हैं कि मैं पिड़छे वर्ग से हूं चाहे जिन्दगी ऐश की काटी हो। अगर पिछड़े वर्ग के या निम्न वर्ग के हो तो आपके जीवन का रहन सहन भी ऐसा बताये।

आज हमारे जितने भी टैक्स है उनका 60 प्रतिशत हिस्सा इस लोकतन्त्र प्रणाली को बनाये रखने के लिये हो रहा है। सभी जानते हैं कि लोकसभा के चुनाव अप्रैर्ल 2019 मे होने हैं परन्ते तीन लोक सभा की सीटों के लिये उपचुनाव नवम्बर में करवाया जा रहा है। एक उप चुनाव पर करोड़ों रूप्या और समय खर्च होता है। क्योंकि हर तरफ से जितना मर्जी चाहो टैक्स आ रहें हैं। फार्म 250 का दिया तब भी लोग लेंगे और पांच सौ का दिया तब भी लेगें। ऐसा मानकर सरकारें चल रही हैं , खास कर यह भाजपा सरकार। परन्तु यह सब अधिक देर नहीं चलता।

# HUMANITY IS ALL PERVASIVE

Ms Priyambika Sood

During our Turkey trip, from Istanbul we went to Edirne, a business hub and a historical town bordering Bulgaria, by Bus. The hotel we had booked was told to be at a walking distance from the Bus stand which prevented us from hiring any Taxi. Very few knew English which was adding to our problem in locating the hotel. Fortunately one person whom we asked knew English. He was going towards the Bus Stand with his wife and small children. He spoke something to his wife in his language, made them seated on a road side bench and started leading us to the probable site of the Hotel." I don't know the exact location but I have some faint idea. Come with me, it shouldn't take much time. "

By now we had understood that he was walking an extra mile to help us which was making us embarrassed. "Thank you very much for your guidance, we'll manage. You may please go back now. Your wife and small children are alone. To be candid, we are indeed overwhelmed by your spirit of service" , said my father. "Don't say like this. It is my duty. Don't worry about my children and wife. Nothing will happen to them. It is a very safe place. Moreover, we are on leisure trip as today being Friday." He replied. He refused to return back despite our persistent requests and continued with his efforts to locate the hotel. After 15 minutes or so we could see the Board 'Hotel Lemon' and with big smile on our faces thanked him profusely for the trouble he had taken.

During the time we were together, we had tried to know about each other. He was from Bulgaria who was working as a Doctor in Edirne. We were convinced that humanity is all pervasive as is air to breathe. To have the feeling that we are more humane than others is wrong. A stranger with his act of humanity can surprise you as we were. Hence avoid making high opinion about yourself, your faith, country and society.

# आर्य समाज के सत्संगो में लोग आयें इस के लिये निम्न तीन सुझाव

आर्य समाज अपने सत्संगों के लिये ही जाना जाता था परन्तु पिछले 40 वर्ष में सत्संगों में आने वालों की संख्या कम होती जा रही है। कई बार मुश्किल ये 10 व्यक्ति भी नहीं होते।

सत्संग का उदेश्य खत्म हो जाता है अगर लोग न आये। फिर सत्संग किस के लिये? जो 8––. 10 व्यक्ती होते हैं उन्होने तो पहले ही यह सब बातें कई बार सुनी होती है। उदेश्य तब परिपूर्ण होता है जब नये लोग जुड़ें और अगली पीढ़ी के लोग भी आय।ं मेरे तीन सुझाव हैं

पहला––––आज जब कि जीवन शैली में परिर्वतन आ चुका है। सुवह 8 या 9 बजे लोगों का आना सम्भव नहीं। सत्संग का समय 9 से 11 बजे हो ताकि कम से कम उपदेश के समय लोग आयें। गुड़गांव व दिल्ली में बहुत सी समाजों ने समय 10 बजे कर दिया है।

दूसरा–––विशेष कार्यक्रम का सतर छोटा हो सुवह 8 बजे से 2 बजे दोपहर आज के समय में लोग नहीं बैठ सकते । हवन समेत 3 घंटे का सतर बहुत है। 10 बजे प्रारम्भ कर 1 बजे तक खत्म किया जाये।

तीसरा––लोग खास कर आज का युवक नवीनता को और माजूदा हालात से जुड़ी बातों को पसन्द करता है न कि हम 100 साल पहले की बातों को दौहरातें रहें। हमारे उपदेशक नवीनता लायें, प्रसंगिक विषयों का चुनाव करें। संस्कृत पढ़ाना न शुरू कर दें। लोगों को अर्थ नहीं भावार्थ चाहिये।

चौथा–– जोर जोर के व आसाप्रागिंक उदघोष बन्द करें। आसाप्रांगिक, जैसे कि कृणबन्तो विश्वाआर्य । घर वाली और बच्चें को तो आर्य समाजी बना नहीं सके। दुनिया को क्या बनायेगें। याद रखिये जो जितने जोर के उदघोष बोलता है वह उतना ही आर्य समाज से दूर होता है। लोग हमारे आचरण को देखते हैं न कि कितने जोर से उदघोष बोला गया।

# धर्म तो निजी विषय है। राष्ट्रपति भवन में सरकारी खर्च पर कोई आयोजन नहीं। राष्ट्रपति कोविंद ने शुरु की नई शानदार परम्परा।

नाम छोट पर दर्शन बड़े––ऐसा कहा जा सकता है हमारे राष्टपति कोविंद जी के बारे में। इस औहदे पर उन्होने बहुत ही शानदार पहलें कर के दिखाई हैं।उनका कहना है कि धर्म तो निजी विषय है। राष्टपति भवन में सरकारी खर्च पर कोई आयोजन नहीं होगा। चाहे जन्माष्टमी हो, क्रिसमिस हो या फिर ईद। ईद तो मनाई परन्तु राष्टपति परिसर मे स्थित मस्चिद में जाकर। गुरू गोविन्द सिंह के प्रकाश उन्सब को उन्होने गुरूद्वारे में जाकर और सभी के साथ लंगर खाकर मनाया । गणेशोत्सव तो उन्होने मनाया परन्तु अपने निजी निवास पर और अपने परिवार जनों के साथ पूजा आरती करके। इन सभी उत्सवों को मनाने के लिये वह सरकारी खजाने से एक भी पैसा खर्च नहीं होने देते।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Mr Rajesh Soni HRD Head Connect
distributing sweaters and bags to slum children.

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

**A/c No. : 32434144307**
**Bank : SBI**
**IFSC Code : SBIN0001828**

All donations to this organization are exempted under section 80G

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

## निमार्ण के 63 वर्ष

# गैस ऐसीडिटी
# शिमला का मशहूर
# कामधेनु जल

**(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई**
**मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)**

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

**Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.**

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

**0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

---

# जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Mr. Sharma

Mrs Shashi Arya and her family

Deepa Arora

Miss Chakarborty

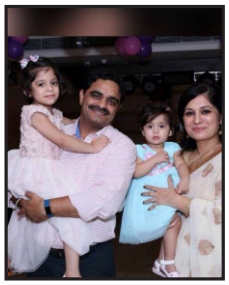

Sagar Arora and family

मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH


## विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-


Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in